पत्रिका, भोपाल
01 MAY 2017

ब्लॉग

आदि शंकराचार्य ने मप्र की भूमि से दिया सांस्कृतिक एकता का संदेश

उदया तिथि के अनुसार 1 मई 2017 को आदि शंकराचार्य की 'प्राकटय पंचमी' को हम पूरे प्रदेश में 'आचार्य शंकर प्रकटोत्सव' के रूप में मना रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी आदि शंकराचार्य के प्रकटोत्सव को 'राष्ट्रीय दर्शन दिवस' के रूप में घोषित किया है। अद्वैत वेदांत दर्शन के प्रवर्तक, सनातन धर्म के पुनरूद्धारक एवं सांस्कृतिक एकता के देवदूत आदि शंकराचार्य का पावन स्मरण हम सांस्कृतिक एकता स्वरूप कर रहे हैं। इस

शिवराज सिंह चौहान।

अवसर पर पूरे प्रदेश में संगोष्ठियां और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। आज से लगभग 1200 वर्ष पूर्व यानी 792 ईस्वी में आदि शंकराचार्य मध्यप्रदेश में नर्मदा तट पर ज्ञान प्राप्ति के लिए आए थे। उन्होंने ओंकारेश्वर के पास गोविन्द पादाचार्य से ज्ञान प्राप्त किया। मध्यप्रदेश को इस पर गर्व है। उन्होंने ही 'नर्मदाष्टक' लिखकर मां नर्मदा के महत्व को स्थापित किया। मध्यप्रदेश से ही उन्होंने 'अद्वैत-सिद्धांत' का प्रतिपादन किया। उन्होंने देश के भ्रमित समाज को दिशा प्रदान की। उनके कारण ही वेदों एवं उपनिषदों की वाणी पूरे भारत में पुनः गूंजी। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक उनकी सांस्कृतिक एकता यात्रा का मध्य-बिन्दु स्वाभाविक रूप से मध्यप्रदेश रहा है और संभवतः यह उन्हीं के संस्कारों का परिणाम है कि आज भी मध्यप्रदेश में अतिवादी आग्रह नहीं है, न धर्म का, न जाति और न ही संप्रदाय का। आदि शंकराचार्य मात्र 32 वर्ष की आयु में ऐसा कार्य कर गए, जिनके लिए हमारी कई पीढ़ियां आभारी रहेगी। आचार्य शंकर ने हमारे देश में सांस्कृतिक एकता की जो मजबूत नींव रखी थी, उसी के कारण आज हम यह कह पाते हैं कि 'हस्ती मिटती नहीं हमारी'। आज दुनिया में शांति भंग हो रही है। लोग भाषा, जाति, धर्म, रंग, देश आदि कई आधारों पर बंट रहे हैं। मेरे विचार से सारी दुनिया को जोड़ने का काम 'वेद दर्शन ही कर सकता है। सृष्टि के कण-कण में भगवान बसते हैं। हर एक आत्मा में परमात्मा' का अंश है, वह हर जगह समाया हुआ है। दूसरे का अस्तित्व कहां है? यही सांस्कृतिक पृष्ठभूमि है, जिसके कारण भारतवासी हजारों साल से यह मानते आए हैं कि 'अयं निजः परो वेत्ति गणनां लघु चेतसां, उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम।' कोई छोटा, कोई बड़ा या कोई ऊंच-नीच न हो, ऐसा हम सभी सोचते हैं। हमने निर्णय लिया है कि मध्यप्रदेश में आदि शंकराचार्य के पाठ शिक्षा की पुस्तकों में जोड़े जाएंगे। ओंकारेश्वर में शंकर संग्रहालय, वेदांत प्रतिष्ठान और शंकराचार्य की बहुधातु मूर्ति स्थापित की जाएगी। प्रदेशभर से धातु संग्रह अभियान चलाकर प्रदेशवासियों को इससे जोड़ा जाएगा।

(ब्लॉगर मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)